Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

जैन परम्परा और राम

डॉ. सत्य प्रकाश पाण्डेय
सहायक आचार्य (हिन्दी), बाबा बरुआदास पी. जी. कॉलेज, परुइया आश्रम, अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश।

Article Info

Article History
Accepted : 20 May 2024
Published : 30 May 2024
Publication Issue :
Volume 7, Issue 3
May-June-2024
Page Number : 70-74

शोधसारांश– जैन परंपरा में राम का स्वरूप न केवल धार्मिक या ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक संकटों का उत्तर देने की क्षमता भी रखता है। इस परंपरा की अभिव्यक्ति यह सिखाती है कि हिंसा से परे भी जीवन के उच्च लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं। यह चित्रण जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता है। आधुनिक संदर्भ में राम का यह रूप हमें आत्म–संयम और करुणा की प्रेरणा देता है। यह न केवल उनके चरित्र की सार्वभौमिकता को दर्शाता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि भारतीय सभ्यता में धार्मिक संवाद और सांस्कृतिक समावेशिता कितनी गहरी है।

मुख्य शब्द– जैन परम्परा, धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, संकट, अभिव्यक्ति, आत्म–संयम।

भारतवर्ष समन्वित संस्कृतियों की ऐसी पुण्यस्थली है जहाँ विविध परंपराएँ एक दूसरे के साथ संवाद करती रही हैं। धार्मिक आख्यानों और महापुरुषों की स्वीकार्यता कई पंथों और संप्रदायों में विविध रूपों में देखने को मिलती है। भगवान राम, जिन्हें हिन्दू धर्म में 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है, उनकी कथा और व्यक्तित्व का प्रभाव न केवल वैदिक परंपरा में बल्कि बौद्ध, जैन और यहाँ तक कि कुछ इस्लामी सूफ़ी परंपराओं में भी दिखाई देता है। हिन्दू धर्म में राम विष्णु के अवतार माने जाते हैं और श्रामायणश ग्रंथ उनके जीवन, धर्मपालन और आदर्शों का महागाथा है। तुलसीदास की रामचरितमानस और वाल्मीकि की रामायण जैसी रचनाएँ उन्हें ईश्वर के रूप में प्रस्तुत करती हैं। किन्तु जब हम अन्य धर्मों की ओर दृष्टि डालते हैं तो वहाँ राम का स्वरूप ईश्वर से अधिक एक महान, धर्मनिष्ठ पुरुष या 'महापुरुष' के रूप में उभरता है। बौद्ध जातक कथाओं में राम की कथा को 'दशरथ जातक' के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें राम बोधिसत्त्व

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

के रूप में सामने आते हैं। यहाँ वह एक वीर, धैर्यवान और करुणाशील नायक हैं, जो बौद्ध धर्म के नैतिक आदर्शों के साथ मेल खाते हैं। भारतीय सूफ़ी संतों और लोक गायकों में भी राम को भक्ति और प्रेम का प्रतीक माना गया है। सूफी कवि कबीर और रविदास जैसे संतों की वाणी में 'राम' एक निराकार परमेश्वर का बोध कराते हैं, जो हिन्दू राम से भिन्न है लेकिन नाम वही है – इस नाम में एक सांस्कृतिक समरसता है।

जैन धर्म भारत की प्राचीनतम धार्मिक परम्पराओं में से एक है, जो अहिंसा, संयम और आत्म–शुद्धि पर आधारित है। इस परम्परा में 24 तीर्थंकरों के उपदेशों के साथ–साथ पौराणिक चरित्रों का उल्लेख मिलता है, जिन्हें जैन दर्शन के अनुरूप व्याख्यायित किया गया है। इनमें राम का स्थान विशेष है। हिंदू परम्परा में राम को भगवान विष्णु का अवतार और मर्यादा पुरुषोत्तम माना जाता है, किंतु जैन परम्परा में वे एक महान मानव हैं, जो अपने कर्मों और संयम से मोक्ष की ओर अग्रसर हुए। जैन ग्रंथों में राम की कथा हिंदू रामायण से भिन्न है, जहाँ वे हिंसा से मुक्त रहते हैं और संन्यास के मार्ग पर चलते हैं।

जैन धर्म की उत्पत्ति का श्रेय 24 तीर्थंकरों को दिया जाता है, जिनमें प्रथम ऋषभनाथ और अंतिम महावीर प्रमुख हैं। जैन परम्परा के अनुसार, यह धर्म अनादिकाल से चला आ रहा है और इसका उद्देश्य जीव को कर्म–बंधन से मुक्त कर मोक्ष प्राप्त करना है। 'आचारांग सूत्र' में अहिंसा को मूल सिद्धांत बताया गया हैरू 'सव्वं जीवं न हिंसति' अर्थात् सभी जीवों को हिंसा न करे[1]। 'उत्तराध्ययन सूत्र' में भी कहा गया हैरू 'अहिंसा परमो धर्मः'[2]। यह सिद्धांत जैन धर्म को अन्य परम्पराओं से अलग करता है।

जैन रामायण में राम न केवल एक नायक हैं बल्कि वे एक बलदेव के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। जैन पुराणों जैसे कि पउमचरियं (पद्मचरित) जिसे आचार्य विमलसूरि ने रचा था, में राम को विष्णु का अवतार नहीं माना गया है, बल्कि वे एक श्रावक हैं, जो अहिंसा, सत्य और संयम का पालन करते हैं। राम के चरित्र को जैन धर्म की मूल शिक्षाओं जैसे अहिंसा और अपरिग्रह के अनुरूप ढाला गया है। उदाहरणतः, जैन राम द्वारा रावण का वध स्वयं नहीं किया जाता; यह कार्य लक्ष्मण (नरायण) के द्वारा संपन्न होता है, ताकि राम की अहिंसा की मर्यादा बनी रहे। राम का संन्यास लेना, उनका संयमी जीवन और मोक्षप्राप्ति दृ यह सब उन्हें एक जैन आदर्श पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित करता है। अतएव, जैन परंपरा राम को धार्मिक अवतार नहीं, बल्कि एक नैतिक आदर्श और धर्मात्मा के रूप में देखती है, जो धर्म और संयम के मार्ग पर चलते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल राम के व्यक्तित्व को एक नई व्याख्या देता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार भारत की धार्मिक विविधता में एक ही नायक के अनेक अर्थ और आयाम विकसित होते हैं।

जैन साहित्य में पौराणिक कथाएँ नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा के लिए हैं। इनमें रामायण और महाभारत का उल्लेख मिलता है, किंतु जैन दृष्टिकोण से पुनर्व्याख्यायित रूप में। **'पद्म पुराण'** जिसे आचार्य रविषेण ने 7वीं शताब्दी में लिखा, राम की कथा का प्रमुख स्रोत है[3]। यहाँ राम को पद्म नाम से जाना जाता है और वे बलचक्रवर्ती (शक्तिशाली राजा) हैं। 'कल्प सूत्र' में संयम की महत्ता बताई गई है–''संयमेन मोक्षः''[4]। जैन धर्म में हिंसा को कर्म–बंधन का कारण माना जाता है, जैसा कि **'सूत्रकृतांग'** में लिखा है–**'हिंसा कर्मस्य मूलं'**[5]। इसीलिए जैन कथाओं में हिंसा से संबंधित घटनाओं को संशोधित किया गया है।

जैन परम्परा में राम की कथा 'पद्म पुराण' **'त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र'** (हेमचंद्र द्वारा), और 'उत्तरपुराण'–में वर्णित है। 'पद्म पुराण' में उनके जन्म का उल्लेख है– **'दशरथस्य पुत्रः पद्मः संन्यासमार्गस्य प्रतीकः'[6]**। कथा में सीता का अपहरण रावण द्वारा होता है, किंतु रावण का वध लक्ष्मण करते हैं। ग्रंथ में लिखा है– **'लक्ष्मणेन रावणो हतः, पद्मस्तु संयमं गतः'[7]।** यहाँ राम को हिंसा से मुक्त रखा गया है।

'त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र' में राम के जीवन का विस्तृत वर्णन है– ''पद्मः राज्येन संन्यासं प्राप्नोत्''[8] । यह कथा जैन धर्म के मोक्ष–प्राप्ति के लक्ष्य को दर्शाती है। 'उत्तर पुराण' में भी कहा गया है– ''पद्मेन राज्यं त्यक्तं, मोक्षः प्राप्यः''[9]। जैन कथा में राम युद्ध के बाद संन्यास लेते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं। यह जैन सिद्धांत को प्रतिबिंबित करता है कि सांसारिक बंधनों से मुक्ति ही परम लक्ष्य है। 'पद्म पुराण' में एक और प्रसंग है जहाँ राम की करुणा का वर्णन है– **'पद्मः सर्वं करुणया दृष्टवान्'**[10]। यह उनके चरित्र की गहराई को दर्शाता है।

जैन धर्म में राम को शलाका पुरुषों में बलदेव माना गया है। शलाका पुरुष 63 महापुरुषों का समूह है, जिसमें तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव शामिल हैं। राम बलदेव हैं, लक्ष्मण वासुदेव और रावण प्रतिवासुदेव। 'त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र' में लिखा है– **''पद्मो बलदेवः संयमधारी, लक्ष्मणो वासुदेवः कर्मबन्धनकारी''[11]।** बलदेव हिंसा से दूर रहते हैं, जबकि वासुदेव हिंसा में संलिप्त होते हैं।

'उत्तर पुराण' में राम के संन्यास का उल्लेख है– 'पद्मः राज्यं परित्यज्य मोक्षमार्गं समाश्रितः'[12]। यहाँ राम संयम और करुणा के प्रतीक हैं। जैन परम्परा में उनका चरित्र मर्यादा और आत्म–संयम का उदाहरण प्रस्तुत करता है। 'पद्म पुराण' में कहा गया है– **'पद्मः संयमेन जीवनं जीवति'** ।[13] यह उनके जीवन के मूल तत्व को उजागर करता है। जैन दर्शन में हिंसा से बचना और संयम अपनाना मोक्ष का मार्ग है, और राम इसका जीवंत उदाहरण हैं। 'सूत्रकृतांग' में भी हिंसा के परिणाम बताए गए हैं– **'हिंसया बंधनं प्राप्नोति'।[14]**

हिंदू रामायण में राम रावण का वध करते हैं, जो धर्म की स्थापना का प्रतीक है। किंतु जैन कथा में यह कार्य लक्ष्मण का है। 'पद्म पुराण' में कहा गया हैरू 'हिंसा कर्मबन्धनस्य मूलं'[15]। हिंदू परम्परा में राम विष्णु के अवतार हैं, जबकि जैन परम्परा में वे मानव हैं। यह अंतर जैन दर्शन की मानव–केंद्रितता को दर्शाता है।

रावण का चित्रण भी भिन्न है। हिंदू रामायण में वह खलनायक है, किंतु जैन ग्रंथों में विद्वान और शक्तिशाली राजा है, जो अहंकार से पतन को प्राप्त होता है। 'पद्म पुराण6 में लिखा है– **'विद्वान् अपि रावणः कामेन संनाशति'[16]।** 'उत्तर पुराण' में उसकी शक्ति का वर्णन है– **'रावणः शक्तिमान् किंतु अहंकारवशः'[17]**। जैन कथा में रावण की मृत्यु उसके कर्मों का फल है, न कि केवल राम के विरोध का परिणाम। यह जैन धर्म के कर्म सिद्धांत को प्रतिबिंबित करता है।

भारत की विविध धार्मिक परंपराओं में नायकों की कहानियाँ न केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन देती हैं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक जीवन में भी दिशा प्रदान करती हैं। जैन परंपरा में राम का जो स्वरूप उभरता है,वहएक संयमी, अहिंसक, और मोक्ष की ओर उन्मुख श्रावक के रूप में – वह आज के समय में विशेष रूप से प्रासंगिक है। आज जब हिंसा, असहिष्णुता और मूल्यहीनता की प्रवृत्ति समाज में बढ़ रही

है, तब जैन राम का यह अहिंसक और धैर्यशील स्वरूप हमें यह सिखाता है कि वीरता का अर्थ युद्ध नहीं, बल्कि आत्मसंयम और नैतिक दृढ़ता है। यह दृष्टिकोण न केवल युवाओं को प्रेरित कर सकता है, बल्कि समाज में संवाद और सहिष्णुता की भावना को भी प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्षतः, धार्मिक विविधता के संदर्भ में भी जैन परंपरा द्वारा प्रस्तुत राम का यह स्वरूप यह दर्शाता है कि एक ही पात्र को भिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है और हर दृष्टिकोण में कोई न कोई नैतिक सीख छिपी होती है। जब आज का समाज नेतृत्व के नैतिक संकट से गुजर रहा है, तब राम का यह संयमी और कर्तव्यनिष्ठ रूप एक आदर्श नेतृत्व का प्रतिरूप बनकर उभर सकता है। जैन राम न केवल स्वयं संयम का पालन करते हैं, बल्कि समाज को भी उसी पथ पर ले जाने का प्रयास करते हैं। वर्तमान सांस्कृतिक परिदृश्य में भी इस स्वरूप की उपादेयता है। साहित्य, रंगमंच, चलचित्र और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में धार्मिक आख्यानों को नए दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, ताकि वे समकालीन समस्याओं से जुड़ सकें। जैन राम का यह वैकल्पिक स्वरूप नई सोच, संवाद और सांस्कृतिक पुनर्पाठ की प्रेरणा प्रदान करता है। इसके साथ ही, जैन धर्म की आत्मसंयम की भावना हमें उपभोग की संस्कृति से हटकर एक संतुलित, पर्यावरण–संवेदनशील जीवनशैली की ओर ले जाने का भी संदेश देती है।

इस प्रकार जैन परंपरा में राम का स्वरूप न केवल धार्मिक या ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक संकटों का उत्तर देने की क्षमता भी रखता है। इस परंपरा की अभिव्यक्ति यह सिखाती है कि हिंसा से परे भी जीवन के उच्च लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं। यह चित्रण जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता है। आधुनिक संदर्भ में राम का यह रूप हमें आत्म–संयम और करुणा की प्रेरणा देता है। यह न केवल उनके चरित्र की सार्वभौमिकता को दर्शाता है, बल्कि यह भी सिद्ध करता है कि भारतीय सभ्यता में धार्मिक संवाद और सांस्कृतिक समावेशिता कितनी गहरी है।

सन्दर्भ

1.आचारांग सूत्र, अध्याय 1, श्लोक 4।
2.उत्तराध्ययन सूत्र, अध्याय 9, श्लोक 34।
3.रविषेण, पद्म पुराण, 7वीं शताब्दी।
4.कल्प सूत्र, भाग 2, श्लोक 15।
5.सूत्रकृतांग, अध्याय 3, श्लोक 12।
6.रविषेण, पद्म पुराण, खंड 1, श्लोक 23।
7.रविषेण, पद्म पुराण, खंड 5, श्लोक 112।
8.हेमचंद्र, त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र, खंड 8, अध्याय 2।
9.उत्तर पुराण, खंड 68, श्लोक 50।
10.रविषेण, पद्म पुराण, खंड 6, श्लोक 45।
11.हेमचंद्र, त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र, खंड 8, अध्याय 3।
12.उत्तर पुराण, खंड 68, श्लोक 45।
13.रविषेण, पद्म पुराण, खंड 6, श्लोक 89।

14.सूत्रकृतांग, अध्याय 4, श्लोक 19।
15.रविषेण, पद्म पुराण, खंड 3, श्लोक 56।
16.रविषेण, पद्म पुराण, खंड 4, श्लोक 78।
17.उत्तर पुराण, खंड 67, श्लोक 19।